चालीस किलो की लड़की

रामजी यादव

चालीस किलो की लड़की

रोहन के लड़के देवधर की शादी थी। बस चट मंगनी और पट ब्याह वाला मामला था लेकिन इतना टटकतोड़ होने पर भी जो इंतज़ाम हुआ था वह दांतों तले उंगली दबाने वाला था। हफ्ते भर पहले छेंका हुआ और उसके बाद ही उर्दी छुई गई। मटमंगरा भी पनतेलवा पड़ा। रोज खा पीकर औरतें जुट जातीं और रोज ही घंटे दो घंटे गीत-गवनई चलती रहती। भत्तवान के ही दिन तिलक और प्रीतिभोज था। यानि दम लेने की फुरसत न थी। एक तरफ लाउडस्पीकर चिंग्घाड़ रहा था तो दूसरी ओर तीन-तीन हुद्दा बाजे कान फाड़े डाल रहे थे।

इतना लोगों ने कहीं और न खाया होगा। अटीदार-पट्टीदार, नाते-रिश्तेदार, गोती-दयाद, भाय-भवद्दी किसी का हाथ-मुंह थमा नहीं।

इसलिए जब बारात निकली तो गाँव में सन्नाटा छा गया। जाने के लिए बसें थीं और लड़के-बाले तो दोपहर में ही उसमें अड्डा जमा लिए। रोहन की ओर से किसी को मनाही न थी। लेकिन जिस-किसी का बाप अपने बच्चे को जाने न देने को राजी था, उस पर कोई बस भी न था। ऐसे बच्चे अपने को दुनिया के सबसे दुर्भाग्यशाली लोग मानने को मजबूर हुये। रोते हुये उन्होंने और कुछ नहीं तो रोहन को यही शाप दिया कि बीच रस्ते में बस कुएं में कूद पड़े। बूढ़ों के लिए डीलक्स बस थी। सारा इंतज़ाम लड़की वाले की ओर से था।

लेन-देन तो ऐसा कि पहले कभी इस गाँव में हुआ नहीं होगा। गोया कोई राजा अपनी कन्या को ब्याहने आया हो और गाड़ी लदाकर आया हो । रोहन कई साल से बिरादरों को लौटा रहे थे लेकिन इस बिरादर का व्यवहार देखकर लौटाना संभव न हुआ। जब उसने कहा कि मुंह खोलिए जितना खोलना हो तब रोहन की आँखें खुली की खुली रह गईं। साढ़े तीन लाख तो केवल नगद था जो तुरंत ही बैंक में जमा करा दिया गया। एकदम सेफ। बाकी सारे इंतज़ामात के लिए दो लाख अलग। तिस पर समधी ने पाँव छूकर जब उनसे कहा कि आपके यहाँ नताई करके धन्य हो गया हूँ तो रोहन उससे अधिक धन्य हो गए। जब समधी ने कहा कि अपनी लड़की आपके घर गोबर पाथने के लिए दे रहा हूँ तो रोहन का कलेजा पहाड़ की तरह हो गया। देवधर कई साल से इंटर सेकेंड डिवीजन करके फौज में जाने का मंसूबा बांधे थे और इस चक्कर में बेतहाशा दंड पेलते थे। दौड़ते और कूदते थे लेकिन अभी तक फौज को उनकी ज़रूरत महसूस नहीं हो सकी थी।

रोहन को अब लगने लगा था कि सारे सपने साकार होने लगे हैं। देवधर के सपने बदल रहे थे और आनेवाली युवती की देह उनके आगे नाचती रहती। यह उम्र की ज़रूरत थी। फोटो देखते ही उन्हें लड़की से प्यार हो गया था।

एक रस्म के तौर पर जब रोहन अपने सगे-संबंधियों के साथ लड़की देखने गए तो पाया कि बहुत सुंदर सी एक गोरी लड़की अपने रंग से अधिक पीली थी और उसकी नीली आँखों में यातना की ऐसी काई जमी थी कि आँसू दिखते ही न थे। लेकिन वह भली लगती थी। चालीस किलो की इस लड़की के लिए साढ़े बारह किलो चांदी और सवा किलो सोना मिला था। बरतन-भांडे तो इतने कि गिनने में भी घंटा लगा। अपने वजन से कई गुना भारी धातुओं के